

उक्तानि निमित्तानि च तद्विषयः

कृष्णमनावनोत्सुकाः।

874

[illegible]

निमेष

खिन्नः।

पवित्रिभुवनगन्धर्वविष्णुमाश्रयावह

मेषसाखनं कथं स्यात् काश्चिदासन्निगतयः इति वि० ३

३३३

मृगसंघमुत्तमवर्षसा ॥२॥

भवयति २

निवाय ड प्रायगमन रूपमत्र

त्रिउक्कः

म३

8

३५२

हृषीकेशा इवा ।

सुत्रगणकति१

अथ सायंकृत्योत्तर

चेलसायन नैकु २२ समनः
नरुनय

मेत ॥ २४ ॥ यां च्छायायवनवृत्तयः कतकेः ध्रुविहिने नीज वरु गुरुवलि सुजा नां कं लघो न काया
मेधे र्थाः ॥ त्वय्यासन्नय विगत रुत ग्या मर्जवृत्तानां ॥ समान्ता न कनिययदि नस्कायि हं सा दगा क्षीक्षा
॥ २५ ॥ नर्थादि द्रुयधित विदिना लक्षणा बांधानी गत्वा मय ४ रुत मीति मरुत्ता मक त्वस्य लक्ष्मी
त्राया नरुनित मरुगयास्य सिखा दय कं मरु रुग मिस्व मि वयथा वयवया ध्रुवाम्नि ॥ २६ ॥ नीधे वाः
स्त्रीगिनिर्मधिवम मरुगविद्या मरुना स्तुत्यका लेन किर्त मि वयो ह यथ ४ कदम्बे ४ यथ मी वनि
३३ य०

पञ्चकु गिका वयवयमन

स्वाययत

पत्रिमला झा विरिर्नो गनी ॥ मृदामानिय धं यति गि सावः मरुथो वनानि ॥ २७ ॥ विद्या न ४ म न्व
ऊन वन दीती वजा नानि सि ३ नद्या नानानि वजल कले र्थिका जाल कानि गलु खदायनयन व
जाज्ञान क (०) त्यलाना काया दाना न के लय विविन ४ यथ ला वी मरुना ॥ २८ ॥ वक्र ४ य न्नाय दोयः
रुवत ४ यस्मिन् स्थालो ॥ मो (०) स्तुत्य यय विमरु वा मा वरु वरु यि ॥ ४ वि द्वा मरु वल य कि मरु
तथी वा म नाना ला नाया (मेथे दिन वम मला वन वी विना सि ॥ २९ ॥ वी वि द्वा रु मरु वि द्वा ग (०) लि ३

क० २

लोका कु वा मरु द्वा मरु २ विमरु विना व

क०। किलन लगि वि० सु क० म० त्या श्रद्धा दि० त्यों गनु न व म य ति० ज नो यत्त वं धू न रि वि० रू ज्ञी य व ग्या
मादि न क व रु य स्य चि ना य प्र वा हा ० हो ला द या स्तु मि वे वि० लो वृ चि म क ० य रु दा न् । था वा य ल ० य
नि द श म र्व स य ० ग त स्मि व स ० य त्या दि द रु व ल र व य श्र द्वा स व ० ॥ ३५ ॥ जौ लो मी ल ० १
व य चि त व ० ० क ग म र्वा व धू य व धू यी त्या रु व न गि वि रि द रु न त्या प दा व ० रु म्भे य ० ० क स न
म व रि य ध र वि न्ना न वा त्मा म क्का श व र्द ल लि त व नि ता या द वा ग कि त व ० ॥ ३६ ॥ रु ० क ० क वि वि ०

नि ग ले ० सा द र वी द्य मा न ० य ० या य कि रु व ल गु वा द म च ० ० व न स्या धू ता शान क व ल
य व ज गी धि रि र्म ध व र्या म्मा य की ज रि व न य नि स्ता न ति क र्म व ० ॥ ३७ ॥ ० नि य म र्क ॥ अ य
न्य स्मि न ज ल ध ल म रु का ल मी सा द्य का ल म्मा ग र्वा न य न वि ष य या व र्थ नि रु न ० क र्म म्मा व
लि य ट रु म्मा लि न ० ० श्या नी या मी म न्द्रा ० रु ल मी वि क ल या म्मा म र्ग जि ता नी ॥ ३८ ॥ या द न्या म क नि म
व स न म्मा ली ला व धू र्थ व ल द्य था र व चि त व ल रि म म र्थ ० का न रु म्मा ० व ध्या स्तु ली न र व य द

सुखान्तायायववायविन्दुं नौभाकनित्वयिमधु कवध्रिदिदीर्घान्तकठाकान्ता ॥ ३२ ॥ यश्चदश्चैकुजतवूः
 वनमण्डलनौहि। लीनहंसाधौतज ह्यतिनवजवायूष्यवकंदधोनहं। नृत्वावधुहवयधुयनवौदना
 गाजिनकां। गान्ताधगस्तिनयनं दृष्टुकिरुवात्याः ॥ ३० ॥ गङ्गाकीर्तावमलवसन्तिथावितातुन
 कौन्त्यालाकेनवयमित्यथसूचिरुधैरुभाकिधौदामिन्याकनकनिकयकाययादगर्थावीताथाः
 त्मगस्तिनितमखत्रामाचरुविक्रवासाध ॥ ३१ ॥ तां कस्याविद्वद्वनं उहोसूययावावतायां नीत्वावादि
 वल।

८

निद्रा कवयय नृषीकृतकाममतासाखिपुतिगठिता कवितिः पुनामतिरुमन २

विवविवमनान्तिविनविद्यत्कलपहं दृष्टसूथयूनवेयिरुवान्वाहयेदधै। गर्भं ममीयननखलः
 मूढदामैयथगार्थकृत्वा ॥ ३२ ॥ तस्मिन्कालेनयनमालिलं थाविताविडिमां नौ गान्तिनयययि
 लिबभावत्तमनां स्मृजाउयालयार्मुकमलवदनातुभौरिधिहंउंनलिन्या ॥ ३१ ॥ यथावृहत्सूयिक
 वदधिस्थादनत्यासूय ॥ ३३ ॥ गरीवाया ॥ ययमिसवितं ध्रुवमीवैयसनं द्वायात्मायिचक
 मिसूह। गोलथामनयेवधं। तस्मादस्या ॥ ३४ ॥ कूमदविसदाव्यहंसित्वनधेया न्मायी कर्तुवक

लसकलादकनयकानि ॥ ४४ ॥ तस्याः किंविदुक्तं बधुगमिर्वपाकवांनी बहूँ गारवं द्रवनिाल
 मलिलवगनमकनाथानि तस्य यस्मान्नैकं कथमपि सर्वं लवमानस्य राविस्त्रगास्वादा विपर्वजः
 वनकिंविदुक्तं समर्थः ॥ ४५ ॥ तन्निशान्नाक्कमिगवसूधार्गमिं यकनमः ॥ ४६ ॥ तौ बन्धुधनिगस्
 रुगंदनिरिष्टयीयमानः नीरेधोत्स्य ययजिगमिषाद्वयपूर्वजिबिक्तं गीतावायुः पन्थिमः
 यिना काननादस्ववाणी ॥ ४७ ॥ गयकन्दनियतवसतिं पश्यमधीकनात्मा यथासावेः स्त

कः प्रजापतिरुदित्य का वायु त्रिति कथं ३

४३

॥ तः कति कन विव विप ३

ययउरुवानव्यामगिगजवादेः ॥ वक्राहमोवगानिरुतावासवीर्जावमृता मयादित्यं दतवहम्
 ससरुगंतदिनजः ॥ ४८ ॥ धानिलखावलयिगात्रतयसा वरुवा नी ययवमाकवलं स्यधिः
 कर्त्तकनाति ॥ धीगायागंदनशागिबवाशा यथरुमयू रं ययमां दियहृतागुनरुगिजि
 तं न्नकथथा ॥ ४९ ॥ आनाधो नमववनरुवदं मलीधिवामिद्वदं कलकल रुयादी किमैक
 माग्रेः ॥ वालवधामं वरुतनयालरुजमानयिथनु ग्रातामर्या रुवियविगर्ता वनिदवस्य कीर्ति ॥ ५० ॥

वमव नी नमः

४३

५२

५३

५४

त्वया दौर्जलमवनमगाजि (लावर्षुथो न) तस्याऽसिं (धाऽपृथमेयितनं दूबरुवात्यवारुप
 द्विष्यक्तगगलमनथानूनमावर्षदृष्टीं बर्कमकागुलमिवरुवऽसू लमध्यन्तनीली ॥ ५० ॥ ताम्
 लीय्यवजयनिवितकलताविद्यमाणी पक्षाल्केयार्दपनिविलसतुकुलसावयुगानी । कन्दक १०
 यातरामधकवऽशीघ्रस्वामासविर्त्तयातीकूर्वनदगयूववधूतवकीरुलानी ॥ ५१ ॥ वक्ताव
 कर्जनयदमैधश्चाययागारुमानऽकर्णकप्रयधनयिष्ठुर्नकोववन्कडुजथाऽवाऊनानी

गी२
 सिगगवगतयेतगालीवधन्वा ॥ वायातेस्तुमिवैकमलाम्यैरुमिश्रनमूरवानि ॥ ५२ ॥
 हित्वाहात्रामैरिमनवसांभितलोचनाङ्गी वन्धूयीत्यासमवविमरवालाङ्गलीयाऽसिधः
 वे । कृत्वातासामैरिगममैयामोम्यसावस्यतीनी अन्कऽऽद्र्यमैसिरुविताविल्लमागलकृष्णः
 ५३ ॥ तस्माङ्कवन्कनखलैर्गेलवाजावतीर्णः जज्ञाक्षन्यासिगवगनयस्वग्रशायानयः
 किंनमोनीवकुक्कुठिवन्नीयाविहृष्टैर्वरुलेऽगम्हाऽकगयुरुलमैकवादिदलरसा
 ५४

मिरुमा ॥ ५४ ॥ नस्या ४ या उरु व गज ॥ वशा मि पूर्वार्ध लम्बी ॥ त्वं च देव कृतिक विगर्द न कृत्यः
 मिरु गीरु ४ मिरु य न्या मय दिरु वत ४ ॥ गान मि क्का य या मा ॥ स्या दका ना य ग न य म ना स म म ना ॥
 हि ना मा ॥ ५५ ॥ आ मि ना ना मिरु रि ना गि त ना रि गं ॥ धि म् ग ॥ ६० ॥ नस्या ४ व य रु व म व ल पा य ॥
 गो र्द उ वा ४ ॥ व क्का य धि म वि न य न म न्या ॥ ६१ ॥ नि ष ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 का य म य ॥ ५३ ॥ न वि द्यो व रु ति स व ल क्क धि म य ॥ ६३ ॥ वा धि ना क्का क यि त व म वी वा ल रा वा
 हि मा ल य ॥ ५२

दवा मि ४ ॥ अरु र्ध्व न म म यि रु म ल वा वि धा ना म ल ॥ नौ य ना हि य म म न रु ला ४ म य दौ क्क रु मा ना
 ॥ ५० ॥ थ त्वां म क्क धि म म रु ना ४ स्वा रु रु म य न मि न द यो क्क का द य वि ग न रु ल द यि य न्द ल
 द्या न ना न क्क धि म म रु ना क न का रु रि रु सा व की ॥ नै क्क वा न स्य ४ य वि रु व य द्द नि रु ला व रु य ना
 ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 य मि न रु रु क न ल वि ग मा न दू न म् दू न या या ४ क ल्प न्द स्य हि न ग त य द पा फ य ॥ ६४ ॥

ना ॥ गते ॥ गदायनमधुनमनिले ॥ काचका ॥ पूर्यमाना ॥ सनकाहिमि यनविजया
 गायनकिनजिह्वि ॥ निद्रादातमनज ॥ वधलेन्यप्रष ॥ धनि ॥ स्यान्संगाता ॥ धौननयसुः
 यनसुगहावा समय ॥ १० ॥ पायेया ॥ द्रुपनमतिक्रम्य नाकनवि ॥ गयान ॥ हंसदाजं ॥ १२
 उपनिय ॥ वत्सयन्को ॥ नर्ध ॥ ननादाचिदिगमनसुनसि ॥ गायामसाहि ॥ ध्याम ॥ पादा
 वलिनियमना ॥ द्युतस्यवविष् ॥ ११ ॥ गत्वावा ॥ दशमुख ॥ कसितयकसीध ॥ केलासस्य
 वाम ॥

पिदगवनितादर्थलस्यातिथि ॥ १४ ॥ अक्षय ॥ कूमदविषदयो ॥ वितत्यस्तिन ॥ र्व ॥ बाभीरुत ॥
 प्रानिदिगमितशम्भकस्या ॥ दृष्टास ॥ १२ ॥ इत्यग्यामित्वयिगटगतमिग्वरिना ॥ सय ॥ कल
 विवददगनकदगो ॥ नस्यागस्य ॥ ११ ॥ रामेद ॥ मिमिनयनय ॥ दली ॥ यरिधि ॥ यी ॥ मैग ॥ त्रस ॥ सतिह
 वरुतामव ॥ केवाससीव ॥ १३ ॥ हितानसिन्नुजगवल ॥ र्य ॥ गु ॥ नादरुदस्ता ॥ कीज ॥ ल ॥ यदिववि
 व ॥ नस्या ॥ दवावला ॥ गो ॥ नी ॥ रुमीरुक्ता ॥ वि ॥ न ॥ विनवय ॥ १४ ॥ हितानि ॥ लो ॥ य ॥ १५ ॥ यान ॥ त्व ॥ व ॥ ज ॥ य ॥ द ॥ स ॥ र ॥ व

स्वर्गमोत्राहणे ॥ ३४ ॥ ननु तदर्थं वलयकलिंगा घटताम्री लूतार्यः नश्च कित्वास्मिन् वयवत
 यायंगुधां गृह्णती ॥ तास्याभाक्कुरु वयदिमखदममलक्ष्यनस्या गृहीता ला ला ॥ ३५ ॥ वलयवन्ध
 गज्जिते र्जयथा ॥ ३५ ॥ हमा मृजयप्रविमलिलेमातमस्याददान ॥ ३६ ॥ कुर्वन् कामातकल ॥ ३७ ॥
 मखयदयतिमिना वतस्य ॥ धृत्वन्तो ॥ ३८ ॥ खजलयुषते ॥ ३९ ॥ कल्यवृद्धां कानि कायोहिन्न
 रुति कविधादनिधि ॥ ४० ॥ न ॥ ४१ ॥ न ॥ ४२ ॥ न ॥ ४३ ॥ न ॥ ४४ ॥ न ॥ ४५ ॥ न ॥ ४६ ॥ न ॥ ४७ ॥ न ॥ ४८ ॥ न ॥ ४९ ॥ न ॥ ५० ॥

१३

नत्वं दृष्टानयनवलकीलास्यसकामयाविन् ॥ याव ॥ कालवहनिगलिला जा बमश्च
 विमाने मूकाजालयधिरमलकीकामिनीव्यवृन्द ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥
 ललितवनिता ॥ ६१ ॥ नृद्यार्यमचिया ॥ ६२ ॥ मजीगाययहनमूवजा ॥ ६३ ॥ स्निग्धग्रीवधार्य ॥ ६४ ॥ त्रक्तसी
 र्यमनिमयवृद्धममर्जलिहया ॥ ६५ ॥ सादाहृदिलयिमलयनरे विहाये ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 हं नयनमलिलयनान्निमिले नो नयकाय ॥ ७१ ॥ कसममगुवजादिदं र्मयागसाधान ॥ ७२ ॥ नायनाय

गय कलहादियथागापयहृदि विरुमानविनखलवयाथोवनादन्यदाह ॥ ३९ ॥ हस्तला
 लाकमलमलकीवाकैकुन्दानविद्धनीतालाधययसववजसायाउनामाननधी ॥ वृणयाला
 नवकनूवकैवावृकल्लगिनिषीमीमन्मवद्वद्वगमजयपनीयवधूनी ॥ ४० ॥ यस्यायिदा ४ सित १४
 मलिमयाभयहृद्यकलानिजातिभ्यायाकसमववनान्यकमकीसहाया ४ अश्ववर्तमधूवतिरुल
 कलावृकायसृत्तलज्जहीवधनिषगनके ४ यस्कवधारुतयू ॥ ४१ ॥ नीवीव ८५५ कसितशुरुगीय

कथकं ४३

प्रयक्ताज्जगतीवास ४ कामादनिरुगकवध्यादियत्तयियय ॥ अविभुजा नलिमूखगता नयायच
 लपदीयान् फीमृश नरिवनि विरुलाथ वलावृकमृष्टि ॥ ४२ ॥ गत्युत्तयादलकयतिभयमन्दा
 वयथे ४ कनककमर् ४ कर्कविर्धिसि लिध्वमृकाजालिस्तनयविम्वकिवसूतधलावे ४ न ८५५ माग्ने ४
 सविशु वृदयसूय गकामिनीनी ॥ ४३ ॥ नया ॥ नीना ४ मगमगतिनायिदिमानाग्रहमी बालखजस्व
 जलकनिकाधायमृत्याय ४ सय ४ कास्य ४ वजलमूवस्तुदिगायजाले ४ धूमाजाना नरुतिनिदूना

ऊर्जवानि ४ य मक्ति ॥ १४ ॥ अग्रस्त्री ॥ अथ यममरुजा कृत्वा सितालिङ्गिताना मम स्नानिस्तव तजनितां तनु
 जालावर्तवा ४ त्वत्संवाधा यममविमर्शे श्वन्द्यादेर्निष्पीथे वाल्म्यनिस्रुठजलवर्षादिनश्चन्द्रका
 मा ४ ॥ १५ ॥ अस्त्री ॥ नरुवननिधय ४ प्रत्यहं वक्रकले वृत्ता यदि र्जनयनियम ४ किं न रेच्यसा र्ज
 विद्या जारय विवधवनिता वा वमरया सहाया वद्धायानवहिनूयवर्नकामिना निर्विगति ॥ १६ ॥
 ॥ मखाधर्वधं यनिसर्वयगसा का दसर्क प्रा यश्चार्थनवहिनूयवर्नकामिना निर्विगति ॥ १७ ॥
 नृ

१५

तनयने ४ कामिलक श्रमाद्ये स्थां नरुग्धु ववनिता विद्यमे भवसिद्ध ४ ॥ १८ ॥ वामधिरुमधनयनया वि
 उभाधलकं पथा र्दसह कि लयं हृषणां तां वि कल्याण ला का ग न ४ वल कमल न्यास था ग्यं
 ययस्या ४ भ क ४ सुगुप्त कलमवला मलुर्न कल्यवृद्ध ४ ॥ १९ ॥ यथा म मा प्रमन्नमख वा ४ यादयानि ह्यपू
 य्या ४ हंस ४ वी व वि न न स नानि ल्यय द्वा न लि न्य ४ क का क्क ४ रु व न नि सि नानि ह्य रा स्व क ला यो
 नि ल्यय ४ हंस नि ल्य आ र्त्ता य नि रु न न मा वृ लि व म्या ४ प दा वा ४ ॥ २० ॥ ग या ग म न ध म य नि र्द

अ२

दूरुप्रनास्मदीयं दूबालकं मन्वयति धनं वृत्ताभावलेन । यस्याद्यानं
 यावदिताम हस्तयायस्वकनमिमावात्मन्यावदुक्त ॥ ६० ॥ **ॐ निमृककलकं ॥** वा
 धीवास्मिन्मन्वकतगिलावदसापानमाग्री रुमेश्वनाविकत्वकमले ॥ निग्ववेदर्यानालेष १६
 यस्यास्माथकतवसतथासा । नर्मसीनिदृष्टं नद्यास्यतिवापगतं वस्त्रामपिषद्दुर्हसा ॥ ६१ ॥
 नस्यामीधनिहितगिरव ॥ ४४ ॥ लविन्दनीले ॥ कीर्णाले ॥ कनककदली ॥ वषट्पद ॥ धीय

४॥ ममेदिन्या ॥ ४॥ यिय ॥ निमखचमसा कातवष ॥ यश्चायाकस्ववितततिर्तत्त्वनिमवस्म
 वामि ॥ ६२ ॥ वक्ता ॥ ४॥ कश्चलकिशलय ॥ ४॥ कंठवन्धुयकान्त ॥ ४॥ यस्यामन् ॥ ४॥ ववकवृममाधः
 वीमलयस्या । नक ॥ ४॥ रवास्ववसहमयावामयादाहिसापी । कादित्यन्यावदनमदिवांधाहनक
 क्षनास्या ॥ ६३ ॥ नम ॥ ४॥ वरुदिकरुलिका कीचनी वासयष्टि । मूलवदामनिरुविनतिथोत्
 र्गयका ॥ ४॥ माले ॥ ४॥ सि ॥ ४॥ दलयमरुलेनहित ॥ ४॥ कान्त्याम ॥ यामध्यामदिव

लेलका

सकलं स दद ॥ ४५ ॥ अहि ४ मा (धा) ददय निहिनेल कं थ था ४ द्रा प्राया न्कालि।
खयधोच दष्ट ॥ कामध्वर्य रुवनमधुनामदिया (गन नूनं) स्याद्यायनखलकमलीययति
स्वामिरिया ॥ ४६ ॥ गत्वा स य ४ कल रुन नूनं तित्यविग ६ रुमा ४ की ज (लेल) प्रथम कथित वय ११
मानो निष ४। अरुमा न रुवनयतिता क रुम स्या ल्यरुम खद्या माली विलसित निरीविष्य
दूमा य दष्टि ॥ ४७ ॥ गन्धी ध्यामा गिरव व द गं य क। विन्वा ध प्रा षी न (ध) कामा च कि न ह विणी
ना।

प्रकृषा निम्न नारि ४। (गो) ली रु बा द ल म ग म ना मा क न मा रु ना र्या या रु प्र स्या य व नि विष
य रु द्दि बा धे व धा ४४ ॥ ४८ ॥ तां जानीया ४ य वि मि ग क था जी वि र्म म दि ती र्य दू वी रु न मा यि
म रु च व च क वा की मि व को ॥ गा (धा) क क रु व रु दि व स थ य ग क रु व ली जा मा मि न्या गि गि
व म थि तां य मि नी वा न्य दू र्या ॥ ४९ ॥ ५० नि य म ३३ ॥ नू र्न ग स्या थ व ल व दि ता क न भ र्य पि याः
या नि ध्या मा ना म गि गि व रु या हि न व षु ध वी षी ॥ रु रु न्य रु मू र्व म स क ली य क्रि य म न क

त्वादिन्दादेवीलंघयसवर्णीक्रीष्टकाभविहलि ॥ ८९ ॥ पूजिआदिकलक ॥ श्री
 तमियवामावलियाकलावा मसादर्थीविबहननवारुतगमीलिरवन्ति ॥ ९० ॥ श्रीवामधूवव
 नसिनिर्वाप ३३ बरुकी कायिइउ४४म नसिबसिकर्तुहिस्या प्रियति ॥ ९१ ॥ इम (मवामलिन १८
 वसनमोमनिद्रियावीर्ण ममगाईविबचितयर्णलयमज्ञाउकामा ॥ तन्नीवादानयनगलि
 लेशमावयित्वावर्णवित् रुथास्य ४ स्वयमयिकुर्तामृकनीविमवकी ॥ ९२ ॥ (ग्यान्मासा

नामनदिवसकायिनस्यावधवाविन्यासकी रुदिग वान्या दहलीमकयष्ट ४ मथागंवाद
 दयनिहितावैरुमास्वादयकी यथ (लेनवमण विबहय मनानीविनादा ॥ ९३ ॥ मद्यायामरु
 नितनथापीरुथाद्विपथाग ४ कि बाधो गुरु वरुवधु र्निचिनादीमखीक ॥ मत्यदि ७ ४ मुखयि
 रुमर्लयमार्धानि ॥ ९४ ॥ तामन्निदामवनिशयनामन्नवागायनरु ॥ ९५ ॥ आधिकार्मीविबह
 शयनमन्तिकी (कया ४ ॥ यावीमूलतनमिवकलामाय (ग्याहिमां ॥ ९६ ॥ नीतागमि ४ ममि

वमयासाधमिच्छावभेया नामवापेर्विबहुजनिनेवधरि ४ पापयमी ॥ ८४ ॥ १०॥
 म्ना ४ सरवा ४ कलमयिदिवातामिमाद्रुनितनी भकायका रुवतिहि जग ल्य दु तानधि वृत्ति ४ स
 त्वनाथोजलदगयनासनवातां नरु ४ काकीसुधमनियविजुनवीतनिदामधया ४ ॥ ८५ ॥ निष्ठा १०
 मनाधवकिगलयकृतिनाविदियकी शुद्धस्नानात्यवधमलकनूनमागल्लर्घ्य ॥ मन्थियाग ४ कथ
 मयिरुवस्वप्रजायीति निदा माद्रुनी नयनगलिलात्यीठ वृद्धावकाशी ॥ ८६ ॥ अष्टवक्त्राविबदि

स्निग्धा ४ सरवा ४ कलमयिदिवातामिमाद्रुनितनी भकायका रुवतिहि जग ल्य दु तानधि वृत्ति ४ स
 त्वनाथोजलदगयनासनवातां नरु ४ काकीसुधमनियविजुनवीतनिदामधया ४ ॥ ८५ ॥ निष्ठा १०
 न्वदृष्टादवनिगनमनिक (६) कयाग्नी तत्ययभयगलितलवोष्णिन्नहावेविवा (६) ४ रुया रुय ४
 कयिनविषमसाजयकीकथा ला नममाकव्यामयमितनखन कवर्षीकवर्ष ॥ ८६ ॥ अष्टवक्त्रा
 विबहुदिवमया निस्वातामहीत्वा ४ यस्या भविगलितसूत्रायामथाधयनीया ॥ स्यर्गकि क्षमय
 मितनखनासक सावयकी गाकाहा गाक धिनविषमाभकवर्षीकवर्ष ॥ ८७ ॥ यादाति ४ वम

निद्रासुखाद्या रुद्रासीनः सुनिविमर्शा याममार्जुनसदृशः । मारुदस्याः स्थलानिमायि च प्रल
 धकथश्चित् सद्यः कळयत्तु जलतायान्ति गच्छाय गृह ॥ १०५ ॥ तामूलाय खजल कलिकाणी
 तलनानि लनय त्याग्य स्नांसममहि नवजालके मालतीनी ॥ विद्युद्भस्मि तनयनं त्वत्सनाः २१
 (थगवाक् वरुंधी नरुनितवचनं मानि नृपिक्रमथा ॥ १०६ ॥ रुद्रमिदं प्रियमविधव विद्धि मामः
 मृदाहं गतं दलोर्मनसि निहितागर्तं त्वत्समीपं ॥ यावद्वानितवचनं त्वयि यथा मया तांथापि

गान्ती मन्दस्त्रि (मे ॥ धनिरिव वलावलिभाक्का सुकानि ॥ १०७ ॥ ॐ ह्यारव्या नयनं तनय
 मेधिनी वान्मुरवीसा त्वामूर्त्तं (० कृशित हृदया वीक्ष्य संशयार्थं व (धौ शयस्मात्य वम
 वहिना सोमसीमकिनीनां कात्मा दन ॥ सुहृदव दत्त ॥ १०८ ॥ तामायुष्मन्ममय
 वचनादात्मनः (धाय कर्तुं कथान वीतवसह ववा वामगिर्यो धमाक ॥ अद्यापन्न ॥ कुशलमवलपु
 कृतिर्त्वा वियुक्तां दृष्ट्वा शयि मल्लु वियदाया निनाम वदव ॥ १०९ ॥ अहं नागैः प्रहृत तन

नागाहमकनतयं मायामुद्रगमलिवतात्कण्ठमूर्त्तिरितत ॥ उक्ताह्वारमधिकतवाक्का
 सिनाहवावली संकल्यमृच्चिगतिविधिनावेविजावद्धमार्ग ॥ ११० ॥ गद्यारवाययदयिकिलमं २२
 य४स्वीनयिवस्तान् कर्त्तुं लालकथयतुमहदाननस्यगलारात् ॥ शास्त्रिकान् ४३ वलविष
 यलायतायामदभ्यन्तामृत्कण्ठाविबचितपदं ममस्व भवेमाह ॥ १११ ॥ ग्यामाखर्भयकिनरुड
 विगीधकण्ठाददियार्गं वकुब्बायार्गं गिनिगिनिविनविहृताय वृक्का ॥ ११२ ॥ इत्यग्यामिपुत्र

नदीवीचिषकविलासान् ॥ ११३ ॥ कर्त्तुं कविदयिनं च मयलिमाहममि ॥ ११४ ॥ त्वामालिखा
 यलयकयिर्नाधादुवागे ४ गिलाया ४ मात्माननं च बलायतिर्नयावदिक्कामिकर्त्तुं अश्रुतावः
 त्मद्वयचिर्दृष्टिबालयार्गमं क्वयस्मिन्नयिनमहममं गार्मनोक्तामाह ॥ ११५ ॥ धावासि
 कर्त्तुं लमं वरुनस्त्वत्मरवशायावाहं दृवीकर्त्तुं यमनमयिर्मायिचिवा ४ द्विगोतिरद्यमोक्तमं
 विगलयकर्त्तुं वामनायगिवजयं दिग्भूमिकयविबलगनीयमसूथानियानि ॥ ११६ ॥ मामाका

निडाज्जत्वा किमपि ब्रह्मणी सत्त्वं विवक्षुः । सात्त्विकं धर्मं कथितं सत्त्वं कृतं कृतं त्वयः ॥ २० ॥
 धर्मकितवत्तमयनं कामयित्वं मयति ॥ २० ॥ नृणां सात्त्विकं धर्मं लिखितं नानादिदिनं । सात्त्विकं
 लीनादसितमयनं मया विष्णोः । नीरुद्धं नानादं किमपि विवक्षुः । यद्यदसत्त्वं कृतं कृतं ॥ २१ ॥
 नृयचित्तं नृणां मया विवक्षुः । नीरुद्धं नानादं किमपि विवक्षुः । यद्यदसत्त्वं कृतं कृतं ॥ २१ ॥
 यद्यदसत्त्वं कृतं कृतं । नीरुद्धं नानादं किमपि विवक्षुः । यद्यदसत्त्वं कृतं कृतं ॥ २१ ॥

२४

यस्यैकं दिव्यं यत्तमं । मिथ्या धर्मं कथितं ॥ २२ ॥ नृणां सात्त्विकं धर्मं लिखितं नानादिदिनं । सात्त्विकं
 धर्मकितवत्तमयनं कामयित्वं मयति ॥ २० ॥ नृणां सात्त्विकं धर्मं लिखितं नानादिदिनं । सात्त्विकं
 लीनादसितमयनं मया विष्णोः । नीरुद्धं नानादं किमपि विवक्षुः । यद्यदसत्त्वं कृतं कृतं ॥ २१ ॥
 नृयचित्तं नृणां मया विवक्षुः । नीरुद्धं नानादं किमपि विवक्षुः । यद्यदसत्त्वं कृतं कृतं ॥ २१ ॥
 यद्यदसत्त्वं कृतं कृतं । नीरुद्धं नानादं किमपि विवक्षुः । यद्यदसत्त्वं कृतं कृतं ॥ २१ ॥

लीलागाविश्वरूप

नेत्रदूत ५८

ॐ नमः श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ मृग लक्ष्मण सुदलः

२

२५

५३१
७